पुरुषों के समान महिलाओं को भी सम्मान देवें

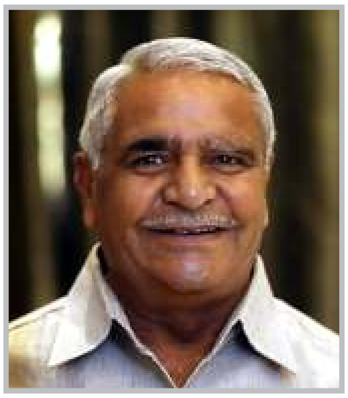

विगत दिनों मैं संपूर्ण देश के प्रमुख केन्द्रों का भ्रमण करने के बाद में इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि अधिकांश स्थानों पर उदासीनता है। तीर्थ की रक्षा एवं विकास हेतु तीर्थ के पदाधिकारी भी अधिकांशतः उदासीन हैं। जो सक्रिय हैं उन्हें बधाई। मेरे विचार से अब समय आ गया है कि जब हमें पुरुषों के समान महिलाओं को भी प्राथमिकता के साथ जोड़ना चाहिए, उन्हें पूर्ण सम्मान देना चाहिए। परिवार के अर्थतंत्र में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका होती है। बिना महिलाओं की सहमति से पुरुष दान कम ही देते हैं, अतः यदि हम विकास योजना में महिलाओं को सहभागी करें तथा मंच पर भी उन्हें यथोचित स्थान एवं सम्मान देवें तो हमें तीर्थ के कार्यों को आगे बढ़ाने एवं विकास के कार्यों में धन संकलित करने में सुविधा रहेगी।

देश की एवं समाज की 50% आबादी को इसका सहज अधिकार भी है। हमारे तीर्थ के वर्तमान पदाधिकारियों को इसका अधिकार भी है। हमें तीर्थक्षेत्र की गठित होने वाली कमेटियों में भी स्त्रियों को सम्यक पद एवं प्रतिनिधित्व प्रदान करना चाहिए। इससे हमें अपनी योजनाएं स्त्री वर्ग तक पहुंचा कर उन्हें क्रियान्वित करने के लिए धन रूपी समर्थन जुटाने में सुविधा रहेगी। दक्षिण भारत में अनेक स्त्रियों ने प्रेरणा देकर महान कार्य कराए हैं। चामुंडराय ने अपनी मां के लिए ही भगवान बाहुबली की मूर्ति का निर्माण कराया। व्रत के उद्यापन में महिलाओं ने महान सिद्धांत ग्रंथों/अन्य ग्रंथों की प्रतिलिपियां कराकर विराजमान करवाई तो उत्तर भारत में **पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी** ने जम्बू द्वीप की रचना हस्तिनापुर में कारवाई। अनेक मंदिरों से युक्त जम्बू द्वीप परिसर हस्तिनापुर का एक प्रमुख आकर्षण है। यहां कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, तेरह द्वीप रचना, समवशरण रचना, विशाल त्रिमूर्ति मंदिर सब आपकी ही प्रेरणा का सुफल है।

मांगी तुंगी में ऋषभ गिरी पर बनी 108 फीट विशाल काय मूर्ति जो विश्व की सबसे बड़ी एक पाषाण से निर्मित मूर्ति है वह पूज्य माता जी की ही प्रेरणा से बनी है। मात्र इतना ही नहीं पूज्य माताजी न्याय, अध्यात्म, व्याकरण, सिद्धांत, भूगोल-खगोल, पूजन, विधान, फुटकर पूजन एवं बाल तथा कथा साहित्य विषयक 500 से अधिक ग्रंथों का सृजन कर इतिहास रच दिया है। आज संपूर्ण देश में यत्र-तत्र-सर्वत्र माताजी के विधान ही प्रमुखता से कराए जाते हैं। आपके इंद्रध्वज, कल्पतरु, सर्वतोभद्र विधान अत्यंत लोकप्रिय है। वर्तमान में मनोकामना सिद्धि विधान भी बहुचर्चित हो रहा है।

भगवान मुनीसुव्रत नाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र जहाजपुर का विकास गणिनी अर्यिकाका श्री स्वस्तिभूषण माता जी ने कराया है। यह अद्भुत आलोकिक क्षेत्र आपकी प्रेरणा से ही अस्तित्व में आया है। आपने भी लगभग 125 ग्रन्थों का सृजन किया है।

संक्षिप्ततः स्त्रियों की सक्रिय सहभागिता तीर्थ विकास का आधार बनेगी। 2025 में इस ओर ध्यान देवें ऐसा मेरा अनुरोध है।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं, भगनियों

सादर जय जिनेन्द्र !

समय के इस बढ़ते कालचक्र में एक और वर्ष हम और आप सभी ने व्यतीत कर लिया है और नए वर्ष ईसवी सन 2025 में प्रवेश कर चुके हैं। मेरी शुभकामनाएं हैं कि यह नूतन वर्ष हम सभी के लिए जीवन में खुशियों की सौगात लाये और प्रत्येक घर परिवार में मंगल और आनंद बना रहे।

जैन समाज पूरे विश्व में एक अलग पहचान वाली समाज है। जैन साधुओं, त्यागीवृतियों, श्रेष्ठी दानवीर और समाजसेवा में जुटे हुए महानुभाव एवं देश के विभिन्न महत्वपूर्ण विभागों में श्रेष्ठ पदों पर पदोन्नत जैन समाज के अधिकारी, ऑफिसर आदि सकल जैन समाज को अनेकों बार गौरवान्वित होने का अवसर देते आ रहे हैं, अब हमारा यह कर्तव्य है कि ऐसा कोई भी व्यक्तिगत या सामूहिक कार्य न करें जिससे सारे देश की जैन समाज की छवि धूमिल हो।

मुझे विश्वास है कि जैन संस्कारों से सिंचित हमारा वर्ग का कोई भी युवा हिंसात्मक नहीं हो सकता है और न ही किसी के प्रति गलत भाव या किसी का बुरा करने की सोच रख सकता है। परन्तु काल चक्र के इस बदलते परिवेश में हमारे तीर्थों या मंदिरों पर हो रहे आक्रमण या अतिक्रमण से आवेश में आकर युवा कुछ कदम अवश्य उठा लेता है जिसका गलत फायदा भी अन्य लोग उठा लेते हैं और राजनीति भी यहीं से शुरू हो जाती है चूंकि जैन समाज एक अति अल्पसंख्यक समाज है हम आबादी में काफी पीछे है और हमारा वोट बैंक भी अन्य के मुकाबले अत्यंत कम है और कोई भी राजनेता बहुसंख्यक वोट वालों का ही साथ देता है और उनका समर्थन करना भी पसंद करता है चूंकि कहीं न कहीं वह भी मजबूर है ऐसी स्थिति में हमें बहुत ही सावधानी और बुद्धिमता से निर्णय लेने की आवश्यकता है और सजगता के साथ अपने तीर्थों और मंदिरों की रक्षा करना है।

आज हमारा एक होना और एक दिखना अत्यंत आवश्यक हो गया है, दिगम्बर और श्वेताम्बर दो बड़े भागों में जैन समाज विभक्त हो गया है दोनों की पद्दति और मान्यताओं में अंतर है परन्तु दिगम्बर समाज में तो पूजा पद्धति एक ही है किन्तु दिगम्बर में भी हमने कई भेद कर रखे हैं। हम भगवान महावीर के अनेकांत के सिद्धांत को भूल रहे हैं या कहें कि मानना नहीं चाह रहे हैं जिससे सर्फ और सिर्फ हमारा ही नुकसान है। एक काल था जब किसी नगर या राज्य में कोई दिगम्बर साधु पहुँचता था तो पूरे राज्य, नगर में किसी बड़े त्यौहार के आगमन जैसी धूम मच जाती थी सभी उनके दर्शन, वंदन कर अपने आप को धन्य मानते थे और आज हमने यह स्थिति बना ली है कि किसी साधू के आगमन के पूर्व हम उसका पंथ पूछते हैं संघ पूछते हैं! क्या एक दिगम्बर साधु का कोई पंथ हो सकता है ? हम पथ को तो गौण कर दे रहे हैं और पंथ में उलझ रहे हैं ऐसा करने से हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते है हम भविष्य के लिए क्या निर्मित कर रहे हैं। निश्चित ही वर्तमान की आने वाले भविष्य के लिए यह हमारी बहुत बड़ी भूल साबित हो सकती है, हमें समय के रहते अपने आप में बदलाव करने की आवश्यकता है। हम अपने जैन धर्म, जैन साधुओं के मान सम्मान को न कि सिर्फ बनाकर रखना है अपितु सारे देश को भी दिखाना है कि एक दिगम्बर साधु की महिमा क्या होती है। हमें आपसी मतभेदों और पंथवाद की ओछी बुद्धि से ऊपर उठना होगा और हमारी एकता को गुंजायमान बनाकर रखना है और इस नूतन वर्ष में पुरानी गलतियों से सीख लेते हुए हमें निरंतर आगे बढ़ना है।

अत्यंत हर्ष है कि हमारे परमपूज्य आचार्यों, मुनिराजों के मंगल सानिध्य में देश के विभिन्न स्थानों पर धर्म ध्वजा फहराने के कार्य चल रहे हैं, दक्षिण से लेकर उत्तर एवं पूर्व से पश्चिम में चहुँओर पंचकल्याणक एवं महामस्तकाभिषेक आदि महा-महोत्सव से यह भूमि पल्लवित हो रही है और जैनों के इन महोत्सव से सारा देश परिचित हो रहा है। इसी पावन बेला में नादनी महाराष्ट्र में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी ससंघ के मंगल सानिध्य में पंचकल्याणक महा-महोत्सव संपन्न हुआ है इस कार्यक्रम के सफल आयोजन पर मैं समस्त नादनी ट्रस्ट के पदाधिकारियों के प्रति शुभकामनाएं एवं साधुवाद प्रकट करता हूँ। और आप को आमंत्रण करता हूँ नवग्रह तीर्थक्षेत्र, वरूर हुबली, जिला धारवाड़, कर्नाटक में पधारने के लिए, जहाँ पर 15 से 26 जनवरी 2025 तक संपन्न होने जा रहे भगवान पार्श्वनाथ जी का महामस्तकाभिषेक एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव व देश सबसे ऊँची 405 फीट की 'सुमेरु पर्वत' की रचना का उद्घाटन और माता की स्थापना साथ ही इस आयोजन में 10000 बच्चों का उपनयन संस्कार (धागा संस्कार) भी किया जाएगा। आयोजित इस महा-महोत्सव में गणाधिपति, गणधराचार्य पूज्य आचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज ससंघ, राष्ट्रसंत आचार्य श्री गुणधरनंदी जी महाराज ससंघ एवं सरस्वताचार्य आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज का मंगल सानिध्य प्राप्त हो रहा है। आप सभी इस महा-महोत्सव में पाधारकर पुण्य संचय करें।

पुनश्चः आप सभी को ईसवी सन 2025 नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

नवीन संकल्पों का वर्ष – २०२५

अनेक चिंताओं और संघर्षों से भरा वर्ष २०२४ बीत गया। वर्ष २०२५ के प्रथम माह में जब यह अंक आपके हाथों में पहुंचेगा तब तक २०२५ का आगमन हो चुका होगा। आशावादी बनकर हमें पूर्ण उत्साह के साथ नए लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कर्मठता से प्रयास करते हुए इसका स्वागत करना है। मैं मानता हूँ कि इस ईस्वी नववर्ष का जैन परम्परा या हिन्दू संस्कारों से कोई वास्ता नहीं है तथापि दुनिया में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा यही नववर्ष मनाया जाता है। फलतः इस निमित्त का लाभ लेकर अपने कार्यों को गति देने में कोई बुराई नहीं है। हाँ! इतना जरूर है कि हमें अपनी संस्कृति, अपने नववर्ष को जरूर याद रखना है।

हमें २०२५ में संकल्प करना है कि-

1. अपने पावन तीर्थों का विस्तृत सर्वेक्षण कार्य प्रारम्भ करना है जिससे वास्तविक स्थिति को जानकार विकास एवं सुधार की योजनायें अच्छे से बनाई जा सकें।
2. तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना की १२५ वीं जयंती कार्यक्रम को अच्छे से मनाने की योजनाओं को अब मूर्त रूप देना प्रारम्भ करे जिससे सब कुछ सुविचारित रीति से संपन्न हो सके।
3. अपने-अपने मंदिरों में गुल्लक योजना प्राथमिकता से क्रियान्वित कराये, उसमें सहभागी बने, बूँद बूँद से घड़ा भरता है। हर रुपया दिगम्बरत्व के काम आएगा ऐसा हम आपको विश्वास दिलाते हैं।

अब कुछ आत्मविश्लेषण करें। गत ५०-६० सालों में भगवान महावीर का प्रचार तो खूब हुआ किन्तु लोग उनको ही जैन धर्म के संस्थापक मानने लगे। पुनः दिगम्बरत्व की उपेक्षा कर अनेक इतिहासज्ञ श्वेताम्बर मान्यताओं एवं उनके ग्रंथों में उपलब्ध जीवनवृत्त को ही प्रचारित करने लगे इसमें मुख्य कारण हमारे द्वारा अपने ग्रंथों के प्रमाणों को सम्यक् रूप से अकादमिक मंचों तक पहुँचाने में उदासीनता ही रही। १९८१ में भगवान गोमटेश्वर बाहुबली की मूर्ति की स्थापना के सहस्त्रविद महोत्सव के निमित्त से दिग्म्बरत्व का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खूब प्रचार हुआ एवं इतिहासज्ञ जैन धर्म के मूल स्वरूप से परिचित भी हुए किन्तु भगवान ऋषभदेव का प्रचार न किये जाने से प्राचीनता उपेक्षित हो गयी। विगत लगभग ३० वर्षों से पूज्य गणिनी ज्ञानमति माताजी भगवान ऋषभदेव के प्रचार हेतु कटिबद्ध है। ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या का विकास, वहां अनेक आयोजन, दिल्ली में ऋषभदेव मेला भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय अटलबिहारी बाजपेयी जी द्वारा लालकिला मैदान में कैलाशपर्वत की प्रतिकृति के सम्मुख निर्वाण लाडू समर्पित करना, भगवान ऋषभदेव समवशरण रथ प्रवर्तन, मांगीतुंगी में भगवान ऋषभदेव की एक पाषाण से निर्मित विश्व की सबसे ऊँची, १०८ फीट उत्तुंग मूर्ति का निर्माण एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि कार्यों से दुनिया में भगवान ऋषभदेव का नाम खूब चर्चित हुआ एवं जैन धर्म की प्राचीनता का इतिहासज्ञों को बोध हुआ।

आप भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता थे। असि-मसि-कृषि विद्या-वाणिज्य एवं शिल्प की शिक्षा आपने ही दी थी। गणित विद्या एवं स्त्री शिक्षा के प्रथम प्रवर्तक आप ही थे। लिपि विद्या का भी प्रारंभ आपके

द्वारा ही हुआ है। आपने अपनी पुत्री को जबसे लिपि विद्या सिखाई थी इसलिए वह ब्राह्मी लिपि कहलाती है।

अधिक क्या कहना हमारे देश का नाम भारत वर्ष भी आपके पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम पर ही पड़ा है। भरत का जन्म भी अयोध्या जी में ही हुआ था।

अब २-६ मार्च २०२५ को अयोध्या में बड़ी मूर्ति रायगंज के परिसर में अनेक मंदिरों का नवनिर्माण होकर पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा होने जा रही है। इस परिसर में तीनलोक की रचना से जन-जन को पापों से बचने की प्रेरणा मिलेगी।

विगत दिनों ५ जनवरी को हमारे सम्मानित अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसादजी ने अयोध्या जाकर इस तीर्थ के विकास कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा में पूज्य माताजी के विशाल आर्यिका संघ का पावन सानिध्य भी रहेगा। इससे धर्म प्रभावना होगी। सभी धर्मप्रेमी बंधुओं को इसमें सम्मिलित होकर धर्मलाभ लेना चाहिए।

तीर्थ किसी की बपौती नहीं : परम पूज्य प्रवर्तक मुनि श्री सहजसागर जी ने विगत दिनों अपने बुन्देलखंड प्रवास में कहा कि तीर्थ किसी की वपौती नहीं। वहां सभी को आने-जाने का अधिकार है। तीर्थों पर सभी संतों का स्वागत होना चाहिए। चाहे वे तेरापंथी हैं या बीसपंथी, आचार्य श्री विद्यासागर जी के शिष्य हों या आचार्य पुष्पदन्त सागर जी के शिष्य। आज लोग संतों की परीक्षा कर रहे हैं। अपने उद्बोधन में पूज्य मुनि श्री ने कमेटी के लोगों को इस प्रकार प्रवृत्तियों से बचने की प्रेरणा है।

ज्ञातव्य है कि पूज्य मुनि श्री सहजसागर जी अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी के संघस्थ शिष्य हैं एवं गृहस्थ जीवन में डॉ. सुशील जैन (मैंनपुरी) के रूप में समाजिक धार्मिक विषयों पर अपनी बेबाक आगम सम्मत राय देते रहे हैं। आपने देश विदेश में व्यापक धर्म प्रभावना की है।

नववर्ष की पूर्व बेला में पूज्य आचार्य श्री के संघ के एक तीर्थ से विचार की पृष्ठभूमि में बोलते हुए पूज्य श्री ने कहा कि आप लोगों ने क्षमा मांग ली एवं हमने कर भी दिया क्योंकि क्षमा करना तो हमारा काम ही है किन्तु हम इस प्रसंग को जीवन भर भूल नहीं पाएंगे।

हम भी सभी तीर्थों की कमेटियों एवं प्रबंधकों से यह निवेदन करते हैं कि सभी तीर्थों पर समस्त दिगम्बर जैन संतों का सदैव स्वागत होना चाहिए। संत, संघ, पंथ आदि के आधार पर उसमें भेद करना कदापि उचित नहीं है। बल्कि मैं तो यह भी निवेदन करना चाहूँगा कि यदि कोई दिगम्बर संत, आर्यिका माता, पिच्छीधारी ऐलक, क्षुल्लक आदि किसी भी तीर्थ के परिक्षेत्र में भ्रमण कर रहे हों तो उनको निवेदन कर अपने क्षेत्र में लाने का प्रयास करें, उनकी वैय्यावृत्ति करें। इससे आपको पुण्य भी मिलेगा एवं क्षेत्र की प्रभावना भी होगी और यात्रियों का आगमन भी बढेगा।

ऋषभ निर्वाण दिवस - आगामी माघ कृष्ण चतुर्दशी अर्थात २८ जनवरी २०२५ को ऋषभ निर्माण दिवस (मोक्ष कल्याणक) आ रहा है। इस दिन प्रायः उन सभी मंदिरों जहाँ आदिनाथ भगवान की मूर्ति विराजमान हैं (प्रायः सभी मंदिरों में रहती है) निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है। जैन धर्म की प्राचीनता को स्थापित करने, जन-जन में इसे प्रचारित करने हेतु आदिनाथ निर्वाण दिवस को भव्यता से एवं प्रमुखता से उत्साह पूर्वक मनाएं एवं समाचार भी प्रकाशनार्थ भेजें।

एक बार पुनः ईसवी नववर्ष की शुभकामनाओं सहित,

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

नया वर्ष सन् 2025, नये संकल्पों को साकार करें

-डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

समय गतिशील है, उसका आगे बढ़ना निरंतर जारी है, समय किसी का इंतजार नहीं करता। जो समय निकल गया, वह अच्छा था; जो समय आगे आएगा वह भी अच्छा ही होगा; इस तरह का विचार रखने वाला व्यक्ति पुरुषार्थ में विश्वास रखता है। भगवान् महावीर स्वामी कहते हैं - जगत् में सबसे बड़ा बलवान कर्म है। कर्म से टक्कर लेते-लेते संसार के अधिकांश प्राणी हार गए परंतु कर्म ने किसी को नहीं बख्शा। जिसने जैसा कर्म किया तदनुसार उसको फल मिला । लाभ और हानि समय की उपज नहीं अपितु कर्म का परिणाम है।

कर्म रूप पुरुषार्थ करते-करते हमने वर्ष 2024 का समय व्यतीत कर लिया और अब 2025 नये वर्ष के रूप में हम सभी के सामने आ गया है। यह हमारी कार्यप्रणाली के सम्यक् मूल्यांकन का समय है। जब हम विश्व की तनावपूर्ण स्थिति को देखते हैं तो यही दिखता है कि हमारी धार्मिक मान्यताओं में भगवान् महावीर स्वामी का जो सर्वोदयवादी सिद्धांत है वही विश्व की संपूर्ण समस्याओं का उचित समाधान है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य के पांच सिद्धांतों में विश्व तथा सामाजिक जीवन की सभी समस्याओं का निदान संभव है।सत्य, संगठन और सदाचार के माध्यम से हम सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर दुखों से दूर हो सकते हैं। परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कहते थे- अपने कर्तव्य के अनुसार जो चल रहा है उससे जीवन का अनुभव होगा। वर्ष 2024 के अनुभव हमें बताते हैं कि हमारा सामाजिक जीवन धार्मिक दृष्टि से पिछड़ रहा है। अधिकांश युवा सिर्फ धनार्जन को लक्ष्य बनाकर आर्थिक प्रगति पर ध्यान दे रहे हैं। उनके आचार-विचारों में न खान-पान का महत्व है और न ही परमपिता परमात्मा जिनेन्द्र देव के प्रति भक्ति। अनेक साधु भी आपसी प्रतिस्पर्धा में लिप्त हो रहे हैं। उनके पास राग- द्वेष की बहुलता है परंतु प्रवचन में राग-द्वेष त्यागने का भाव आता है। जो व्यक्ति जितना ज्यादा धनवान है वह मुनियों-साधुओं के उतने ही निकट है। जो युवा साधुओं से जुड़े हैं उनमें कितने धार्मिक हैं या अधार्मिक ? इसका मूल्यांकन होना जरूरी है।

हम सभी जानते हैं कि संसार का कोई भी व्यक्ति अणु मात्र पदार्थ भी अपने साथ नहीं ले जा सकता है। इस ज्ञान के बावजूद कई व्यक्ति धनलिप्सा में बेईमानी, भ्रष्टाचार, चोरी, कालाबाजारी में लिप्त हैं; जो कि पूरी तरह से अधार्मिक और समाज विरोधी कृत्य है। लाखों- करोड़ों रुपयों के फंड बनाने तथा विशाल मंदिरों, जिनालयों का निर्माण कराने वाले अल्पसंख्यक जैन समाज के पास भूखे को रोटी दो, प्यासे की प्यास बुझाओ, रोगी को निरोगी बनाने में सहायता करो; की कोई बृहद् योजना नहीं है। तीर्थों को लेकर कोई स्पष्ट नीति नहीं है। तीर्थ विकास अधिकांशतः मुनियों की कृपा पर आश्रित है। अतः कई तीर्थक्षेत्रों का पर्याप्त विकास हो रहा है तो कई तीर्थ अभी भी उपेक्षित हैं, जिनकी पर्याप्त सुरक्षा आवश्यक है। तीर्थों की नि:शुल्क भोजन

व्यवस्थाएं पर्याप्त फंड होने के बावजूद भी वर्तमान में खत्म हो गई है, जो नवनिर्मित सर्व सुविधायुक्त धर्मशालाएं हैं उनका शुल्क कई तीर्थ क्षेत्रों पर होटलों के शुल्क को भी पीछे छोड़ रहा है। ऐसी स्थिति में धार्मिक क्षेत्रों पर धर्म- ध्यान,पूजा - पाठ करने वाले निम्न तथा मध्यमवर्गीय व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति को देखकर निराश हो जाते हैं। विद्वानों की स्थिति यह है कि आज के साधुगण उन्हें ज्यादा महत्व न देकर धनिकों को अधिक महत्व दे रहे हैं। जो धर्मानुसार शिथिलाचार का विरोध करते हैं वह मंच, माला, माइक से वंचित हैं और चापलूस आगे बढ़ रहे हैं। इन विषयों पर वर्ष 2025 में पर्याप्त विचार कर उचित निर्णय लेने होंगे तभी हमारी धार्मिक,सामाजिक और बौद्धिक एकता मजबूत होगी। कोशिश सभी को मिलकर करनी होगी। कहा गया है -

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

वर्ष 2025 में धर्म, समाज संस्कृति, तीर्थ और आचार-विचारों का संरक्षण हो; इसके लिए कुछ सिद्धांत मार्गदर्शक बन सकते हैं, जिनमें कुछ निम्न लिखित है :-

१. सच्चे देव, शास्त्र, गुरु का संरक्षण आगम को दृष्टिगत रखते हुए किया जाए।सामाजिक एकता के नाम पर मूल सिद्धांतों से समझौता न किया जाए।

२. प्रवचनों में जिनवाणी मुख्य विषय रहे, जनवाणी धार्मिक मंचों से प्रसारित न हो। जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धांतों का ज्ञान देना, प्रवचनों का मूल उद्देश्य होना चाहिए।

३. एकल विहारी आचार्य की परंपरा तथा एकल विहारी साधु - साध्वी के विहारों को हतोत्साहित किया जाना चाहिए।

४. साधु संतों के पास आचरण में उच्च व्यक्ति दिखे, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। मद्य,मांस, मधु, पान,गुटखा तंबाकूखाने ने वालों के लिए धार्मिक मंच पूर्णत: वर्जित हों।

५. धार्मिक ग्रंथ प्रकाशन में पर्याप्त सावधानियां बरती जायें ताकि जिनवाणी और जनवाणी का मिश्रण न हो।

६. श्रावक, जैन संस्कारों से सुसंस्कृत श्रावक बनें और व्रत निष्ठा में तत्पर रहकर के षडावश्यकों के अनुरूप अहर्निश कार्य करें ताकि जैनत्व सुरक्षित रहे।

७. तीर्थंक्षेत्रों के संरक्षण, संवर्धन और विकास पर विशेष ध्यान देकर कार्य योजनाएं बनायी जायें। जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटियों का गठन जातिवाद-वर्गवाद पर आधारित न हो।

८. शिक्षण संस्थानों में जैन पाठ्यक्रम विशेष कर प्राकृत तथा जैन धर्म और दर्शन के पठन-पाठन की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु सार्थक प्रयास किए जायें।

९. पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा संस्थापित प्राचीन शिक्षण संस्थानों के संरक्षण पर पर्याप्त ध्यान दिया जाये।

१०. विलुप्त हुए प्राचीन ग्रंथों का प्रकाशन किया जाए ताकि जिनवाणी सुरक्षित रहे।

११. प्रथममानुयोग में वर्णित महापुरुषों के जीवन चरित्र का आधुनिक भाषाओं में लेखन कराया जाए।

१२. जैन जीवन शैली में प्रतिदिन देव-दर्शन, स्वाध्याय, रात्रिभोजन त्याग, जलगालन विधि का परिपालन हो तथा न्यायपूर्वक धन उपार्जन करने वालों का सम्मान हो।

१३. औषधिदान को भी महत्व दिया जाए ताकि साधनहीन जैन बन्धुओं को आर्थिक संरक्षण मिल सके।

१४. राजनैतिक संगठनों से सम्पर्क कर जैन राजनैतिक हितों के लिए कार्य करने के लिए कहा जाये।

१५. जीव दया और शाकाहार के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयास किए जायें।

हम सभी का यह प्रयास होना चाहिए कि वर्ष 2025 में हमारी जनसंख्या कम न हो, तीर्थों पर अतिक्रमण न हों, देव-शास्त्र-गुरुओं के नाम पर प्रतिस्पर्धा न बढ़े और धार्मिक पूजा-पद्धति के नाम पर चल रहे मतभेद, मनभेद में पनपें। इसके लिए सार्थक प्रयास कर धर्म और समाज के हितों का पर्याप्त संरक्षण किया जाए। जीवन इतना थोड़ा है कि उसमें से क्षण भर भी बर्बाद नहीं किया जा सकता। अतः समय का सदुपयोग करें और नए शुभ संकल्पों के साथ आगे बढ़ें।

मंगल भावनाओं के साथ सभी को आगामी नव वर्ष-2025 के लिए असीम शुभकामनाएं।

महान व्यक्तित्व मनमोहन सिंहजी को जैन समाज का प्रणाम

देश को आर्थिक संकट से उबारने वाले, मौन शक्ति के प्रतीक, महान अर्थशास्त्री, शिक्षाशास्त्री पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह जी का 26 दिसंबर को निधन हो गया। उनके निधन का समाचार जानकर, उनके बारे में एक से एक महान बातें जानकर 28 दिसंबर तक उनके अंतिम संस्कार होने तक मेरी आंखों से लगातार आंसू बहते रहे।

मुझे अच्छी तरह याद है जैन समाज की दशकों से चली आ रही अल्पसंख्यक दर्जे की मांग को उचित समझते हुए, सभी समुदायों के प्रति समान दृष्टि रखते हुए सामाजिक न्याय की प्रतिबद्धता को स्वीकार करते हुए 27 जनवरी 2014 को जैन समाज को अल्पसंख्यक दर्जा देने की घोषणा कर उन्ही मनमोहन सिंहजी ने एक ऐतिहासिक निर्णय लिया था। 31 जनवरी 2014 को केंद्रीय मंत्री श्री कपिल सिब्बल जी का खचाखच भरे शाह आडिटोरियम में जैन समाज दिल्ली ने इस ऐतिहासिक निर्णय के लिए आभार प्रकट करने हेतु समारोह का आयोजन किया था। मैं देख रहा था कि जब जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष चक्रेश जैन ने उनका अभिनंदन किया, आभार प्रकट किया तो सिब्बल जी ने बडे सामान्य तरीके से कहा था कि यह तो आपका हक था।

बात 27 मई 2006 की है मनमोहन सिंह जी ने ही विज्ञान भवन में जैन विद्या संस्थान द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में जैन पांडुलिपि की सूचियां जारी की थी, उस समय अपने गरिमापूर्ण उदबोधन में उन्होने कहा था कि जैन विचारधारा ने ही भारत को रूढियों व अंध विश्वासों से लडने की ताकत दी। जैन दर्शन से ही देश में वैज्ञानिक सोच का विकास हो सका है। उस अविस्मरणीय समारोह को मैने नवभारत टाइम्स के लिए कवर किया था।

2021 में नैतिक व मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए मनमोहन सिंह जी को अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया था। जैन समाज को तो उनका आभारी होना चाहिए। उस महान व्यक्तित्व को समग्र जैन समाज की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

रमेश चंद्र जैन एडवोकेट, नई दिल्ली

दुनिया में मानवाधिकारों का हनन? ज्वलंत प्रश्न

विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.)

भारत के संविधान में संविधान निर्माताओं ने आम नागरिक के अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी उल्लेख किया है। इन्हें संविधान में नीति निदेशक तत्व कहा है। नीति निदेशक तत्वों में विश्व वंदनीय अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के पावन संदेश **"जियो और जीने दो"** के साथ विश्व शांति, प्राणी मात्र के कल्याण की भावना समाहित की गई है। इसी प्रकार मौलिक अधिकारों में आम आदमी के सर्वांगीण विकास की कानूनी व्यवस्था की गई है।

भारतीय संविधान में सुप्रसिद्ध कानून विद डॉं भीमराव अंबेडकर के नेतृत्व में संविधान निर्माताओं ने आम नागरिक के मानवाधिकारों का हनन न हो इसकी समुचित व्यवस्था की है। दुनिया के अनेक देशों में आम आदमी के मानवाधिकारों की रक्षा हेतु एक नहीं अनेक प्रयास किये हैं। मानवाधिकारों की रक्षा हेतु सर्वप्रथम ब्रिटेन में सन 1215 में महान घोषणा पत्र प्रकाशित हुआ। इस घोषणा पत्र में उल्लेख किया है किसी नागरिक को उस समय तक बंदी न बनाया जाये और न ही निर्वासित किया जाये, जब तक उसका अपराध सिद्ध न हो जाये। ब्रिटेन में ही सन 1679 में बंदी प्रत्यक्षीकरण अधिनियम पारित किया गया। जिसमें व्यवस्था की गई कि बिना अभियोग चलाये किसी भी व्यक्ति को नजरबंद नहीं रखा जा सकता। ब्रिटेन में ही सन 1689 में अधिकार पत्र पारित कराया इसमें अन्य बातों के अलावा यह व्यवस्था थी कि संसद में जनता के प्रतिनिधियों को भाषण की स्वतंत्रता होगी। दुनिया में मानवाधिकारों की रक्षा पर अटलांटिक चार्टर सन 1941 एवं संयुक्त राष्ट्र संघ घोषणा 1942 से बल मिला। संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में मूलभूत मानवीय अधिकारों में गौरव तथा मूल्यों में, स्त्री व पुरुषों के समान अधिकारों को पुनः स्वीकार किया गया।

कुछ आवश्यक संशोधनों के साथ 10 दिसंबर 1948 को संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने सर्वसम्मति से पारित किया। इस मानवाधिकार घोषणा पत्र में प्रस्तावना सहित 30 अनुच्छेद हैं। इसके बाद 1993 में वियना में मानवाधिकारों को बढ़ावा देने के लिये सम्मेलन हुआ। जिसमें 171 देशों ने सहयोग करने का आश्वासन दिया। जिसका अनुमोदन दिसंबर 1993 में संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा में किया। वियना घोषणा में उल्लेख किया कि बड़े पैमाने वाले मानवाधिकारों के हनन, विशेष कर जनसंहार, जातीय विद्वेष और बलात्कार, आत्मनिर्णय, वर्तमान और भविष्य की पर्यावरण संबंधी जरूरतों,परेशानी में रह रहे लोगों, विशेष रूप से अप्रवासी श्रमिकों, विकलांग व्यक्तियों और शरणार्थियों के साथ महिलाओं और बालिकाओं के मानवाधिकारों पर बल दिया गया। यहाँ यह विचारणीय प्रश्न है यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकारों की हर स्तर पर रक्षा करने का संकल्प लिया गया है। दुनिया का हर देश भी चाहता है उसके नागरिकों के मानवाधिकारों का० हनन न हो। परन्तु सरकारें यह जानते हुए कि उनकी रक्षा करना चाहिए व्यावहारिक रूप देने में असफल हैं। भारत में हम आम नागरिकों की स्थिति को देखें तो आजादी के 75 वर्ष बाद भी दयनीय स्थिति है।

ग्रामीण अंचल में आज भी छुआछूत नहीं मिटा है। दलितों को गाँव के कुए से पानी नहीं भरने दिया जाता है। गाँव के जमींदार ठाकुर साहब या मुखिया के मकान के आगे से भी दलितों हरिजनों को जूते चप्पल पहनकर निकलने की अनुमति नहीं है। ग्रामीण अंचल में दलितों को अपने बेटे की बारात दूल्हे को घोड़े पर बैठाकर निकालने की अनुमति नहीं है। कोई हरिजन दलित इन पुराने दकियानूसी नियमों को तोड़ने का दुस्साहस करता भी है तो उस पर अनेक अत्याचार होते हैं। गोली चल जाती है मकान खेत में आग लगा दी जाती है। गाँव से ही निकाल दिया जाता है।हमारे देश भारत में ही करोड़ों बच्चे भीख मांगते देखे जाते हैं। 10 से 15 वर्ष के बच्चे देश में लाखों करोड़ों की संख्या में रेल स्टेशनों के आसपास प्लास्टिक की थैली एवं प्लास्टिक की पानी की खाली बोतल एकत्रित करते दिख जायेंगे। गरीब के बच्चे पढ़ते भी हैं तो उन्हें कक्षा 5 में जोड़ना घटाना नहीं आता है। उन्हें 10 तक पहाड़ा नहीं सिखाया जाता है। इन सब विसंगतियों के वावजूद उन्हें कक्षा 5 तक अनिवार्य रूप से उत्तीर्ण कर दिया जाता है। भारत में बाल मजदूरी पर प्रतिबंध के वावजूद करोड़ों 18 वर्ष से कम आयु के बच्चे बाल मजदूरी कर रहे हैं, उन्हें पर्याप्त मजदूरी नहीं मिल रही है। रहने, जीवन यापन करने, रोटी कपड़ा मकान की सुविधाएं नहीं मिल रही हैं।सरकार स्वयं संविदा में कर्मचारियों की नियुक्तियां करती है। इनमें कुछ नियुक्तियाँ तदर्थ करती है। क्या इन्हें समान कार्य के लिये समान वेतन,अवकाश, पेंशन आदि की सुविधा मिलती है?

कोरोना महामारी के भारी प्रकोप के कारण देश व्यापी लॉकडाउन24 मार्च 2020 को 21 दिन का लगाया। हजारों उद्योग एवं फेक्ट्री बंद हो जाने से लाखों मजदूर भुखमरी के शिकार हो गये। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, झारखंड, विहार के मूल निवासी मजदूरों का पलायन हुआ। अपने अपने प्रदेश सुरक्षित पहुचने की आशा से उन मजदूरों ने रेल एवं बस की सुविधा नहीं मिलने पर पैदल यात्रा सैकड़ों एवं हजारों किमी की सड़क मार्ग से की। भूखे प्यासे मजदूरों की सहायता स्वयं सेवी संस्थाओं ने उदारता से की। इन असहाय दुखी मजदूरों की सहायता करने सरकार ने मानवीयता का परिचय नहीं दिया। मानवाधिकारों के हनन का इससे बड़ा उदाहरण मिलना असंभव प्रतीत होता है।

भारत में सबसे ज्यादा शोषण बाल मजदूरी के नाम पर नौनिहालों का हो रहा है।बाल मजदूरी के नाम पर एक घटना का उल्लेख कर रहा हूँ, इस घटना से मैं स्वयं वहुत दुखी हुआ हूँ। बाल मजदूरी, बाल शोषण के विरुद्ध जीवन भर संघर्ष करने बाले भारत माता के महान सपूत श्री कैलाश सत्यार्थी जी को सन 2015 में नोवल शांति पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। उनको यह सम्मान मिला तो दुनिया में हम भारतवासियों का सिर गर्व से ऊंचा हुआ। नोवल शांति सम्मान मिलने पर श्री सत्यार्थी जी 6 जनवरी 2016 को

गुना पधारे। गुना में उनकी भव्य शोभायात्रा निकली। शोभायात्रा में घोड़ा चल रहा था, उस घोड़े की रस्सी हाथ में लेकर 10 वर्ष का बाल मजदूर चल रहा था। श्री सत्यार्थी जी को भी पता नहीं था, जिस बाल मजदूरी, बाल शोषण के विरुद्ध जीवन भर संघर्ष करते रहे हैं, गुना बालों ने उन्हें दिखा दिया कि आप संघर्ष करते रहें बाल मजदूरी दुनिया से समाप्त नहीं हो सकती। सारी दुनिया मानवाधिकारों की रक्षा के लिये कानून बना रही है।इन कानूनों का पालन नहीं हो रहा है। मानवाधिकारों की रक्षा के लिये सरकारों के साथ साथ आम आदमी की दूषित मानसिकता में परिवर्तन आवश्यक है।

भगवान आदिनाथ का पंचामृत अभिषेक हुआ:

नांदणी महाराष्ट्र में महामस्तकाभिषेक के साथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव संपन्न

नांदणी (महाराष्ट्र) में पंचकल्याणक महामहोत्सव के दौरान 12 वर्ष बाद प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का बुधवार को भव्य पंचामृत अभिषेक किया गया। परम पूज्य नवपटाचार्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी संसघ एवं अनेक आचार्य संसघ के मंगल मय सानिध्य में सानंद जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव संपन्न हुआ।

हेलिकॉप्टर से हुई पुष्पवर्षा - धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि इस अवसर पर हजारों समाजजन उपस्थित हुए। इस अवसर पर हेलिकॉप्टर से पुष्प वर्षा भी की गई। बुधवार को महामस्ताभिषेक देखकर समाज जन बहुत ही हर्षित हुए और जयघोष नमोस्तु शासन जयवंत हो का गुंजायमान करते रहे।

पंचतीर्थी पाँच प्राचीन प्रतिमाएँ

- डॉ. महेन्द्रकुमार जैन, 'मनुज', इन्दौर

पंचतीर्थी तीर्थंकर प्रथम, गन्धर्वपुरी, देवास (म.प्र.) ११-१२वीं श.

गंधर्वपुरी में बहुतीर्थी तीर्थंकर प्रतिमाओं में पंचतीर्थी तीर्थंकर प्रतिमाएँ सर्वाधिक प्राप्त होती हैं। पंचतीर्थी अर्थात् एक ही शिला में पाँच तीर्थंकर प्रतिमाएँ, वे समान हों या किसी एक बड़ी प्रतिमा के परिकर में अन्य चार लघुजिन उत्कीर्णित हों। गंधर्वपुरी में द्वितीय श्रेणी की अर्थात् एक प्रतिमा मुख्य है और चार अन्य लघु तीर्थंकर उसके परिकर में उत्कीर्णित रहते हैं। उनमें से एक सुन्दर प्रतिमा में मूलनायक अर्थात् मध्य की बड़ी प्रतिमा फणयुक्त पार्श्वनाथ की है, उसका परिचय "रहस्यमयी नगरी की छह पार्श्वनाथ प्रतिमाएँ" शीर्षक से हमने दिया है। यहाँ हम पाँच पंचतीर्थी प्रतिमाओं का परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।

पंचतीर्थी तीर्थंकर द्वितीय, गन्धर्वपुरी, देवास (म.प्र.) ११-१२वीं श.

प्रथम पंचतीर्थी पद्मासन तीर्थंकर- सिंहासन में विरुद्धाभिमुख दो सिंह, मध्य में पल्लव सहित पुष्पगुच्छाकृति, उसके ऊपर चरण चौकी, तदोपरि मुख्य पद्मासन प्रतिमा आसीन। पाषाण क्षरित हो जाने से श्रीवत्स स्पष्ट नहीं है, नासाग्र दृष्टि, स्कंधों को स्पर्श करते हुए कर्ण, उष्णीष सहित कुंचित केश और विशाल प्रभामण्डल उत्कीर्णित है। दोनों पार्श्वों में द्विभंगासन में पूर्ण आभरण

भूषित चामरधारी देव, उनके ऊपर के भाग में एक-एक पद्मासनस्थ लघु जिन, उनसे ऊपर माल्यवाहक पुष्पवर्षक देव। दोनों तरफ ये देव सपत्नीक उड्डीयमान अवस्था में दर्शाये गये हैं। तदोपरि वितान भाग में छत्रत्रय एवं दुंदुभिवादक भग्न है, छत्रत्रय के दोनों ओर सवारयुक्त गजलक्ष्मी के गज, उनसे पीछे, शिलाफलक के बाह्य भाग में कायोत्सर्गस्थ लघु जिन उत्कीर्णित हैं। इस तरह परिकर में दो पद्मासन लघु जिन, दो कायोत्सर्गस्थ लघुजिन और एक

पंचतीर्थी तीर्थंकर चतुर्थ, गन्धर्वपुरी, देवास (म.प्र.) ११-१२वीं श.

पंचतीर्थी तीर्थंकर तृतीय, गन्धर्वपुरी, देवास (म.प्र.) ११-१२वीं श.

पद्मासन मूलनायक तीर्थंकर प्रतिमा। इस तरह पाँच प्रतिमाएँ होने से यह पंचतीर्थी प्रतिमा है।

द्वितीय पंचतीर्थी पद्मासन तीर्थंकर- इस प्रतिमा के भी सिंहासन में विरुद्धाभिमुख सिंह हैं, मध्य में धर्मचक्र है, सिंहासन पर वृत्ताकार चरण-चौकी है, जिस पर पद्मसनस्थ तीर्थंकर आसीन हैं, चरण चौकी वृत्ताकार होने से उनके घुटने बाहर निकले हुए हैं। आसन के दोनों ओर यक्ष-यक्षी हैं, किन्तु स्पष्ट नहीं हैं। मुख्य तीर्थंकर के स्कंधों पर सुदृढ केश- लटिकाएँ उत्कीर्णित हैं, जिससे यह आदि तीर्थंकर वृषभनाथ की प्रतिमा प्रतीत होती है।

दोनों पार्श्वों में चामरधारी देव और उनके समानान्तर बाह्य भाग में एक-एक समपादासन में कायोत्सर्गस्थ लघु जिन उत्कीर्णित हैं। परिकर में उनसे ऊपर माल्यधारी देव-देवी दोनों ओर युगल रूप में हैं। शिरोपरि भग्न त्रिछत्र के ऊपर भग्न दुन्दुभिवादक, उसके दोनों ओर एक एक नर्तकी, तत्पश्चात् गजलक्ष्मी के एक-एक हाथी और उनके बाह्य भाग में एक-एक कायोत्सर्गस्थ लघु जिन उत्कीर्णित हैं। इस तरह परिकर में चार लघुजिन और एक मूलनायक तीर्थंकर

होने से ये पंचतीर्थी आदिनाथ जिन प्रतिमा है। संग्रहालय की इसकी परिचय-पट्टिका पर इसका समय 10-11 वीं शती लिखा है।

तृतीय पंचतीर्थी कायोत्सर्गस्थ तीर्थंकर- इस कायोत्सर्गस्थ खड़ी प्रतिमा प्रतिमा के टेहुनी से नीचे के हाथ भग्न हैं, वक्ष पर श्रीवत्स है, क्षरित होने पर भी सौन्दर्ययुक्त स्मित मुखमण्डल है, उष्णीष उक्त कुंचित केश हैं, चरणों के दोनों ओर चामरधारियों के आगे अंजलिबद्ध एक-एक आराधक बैठा है, चामरधारियों के उपरिम स्थान में एक-एक कायोत्सर्गस्थ लघु जिन उत्कीर्णित हैं। शिर के दोनों ओर एकल माल्यधारी देव हाथों में अविकसित सनाल कमल लिये हैं। वितान में त्रिछत्र, उस पर दुन्दुभिवादक है, उसके दोनों ओर एक-एक पद्मासनस्थ लघुजिन उत्कीर्णित हैं।

चतुर्थ पंचतीर्थी कायोत्सर्गस्थ तीर्थंकर- इस कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा के भी हाथ भग्न हैं। श्रीवत्स सुन्दर और स्पष्ट है। उष्णीष और कुंचित केश अन्य प्रतिमाओं की अपेक्षा बहुत सुन्दरता से उत्कीर्णित किये गये हैं। प्रभावल में पुष्पकलिकाएँ व बाहर से एक परिधि युक्त होने से प्रभावक है। यह अन्य प्रतिमाओं से भिन्न है, इनके दोनों ओर चामरधारी देव हैं, इनके अतिरिक्त वितान से पूर्व परिकर में अन्य आमूर्तन नहीं है, वितान में एक छत्र व दुन्दुभिवादक है, उसके दोनों ओर दो-दो कायोत्सर्गस्थ लघुनिज उत्कीर्णित हैं।

पंचतीर्थी तीर्थंकर पंचम, गन्धर्वपुरी, देवास (म.प्र.) ११-१२वीं श.

पंचम पंचतीर्थी कायोत्सर्गस्थ तीर्थंकर- इस प्रतिमा का पादपीठ तो अदृष्ट है, श्रीवत्स क्षरित हो गया है, फिर भी कुछ अवशिष्ट है। उष्णीष रहित केश हैं। छत्र है या फणाटोप रहा है, अधिकांश भग्न व क्षरित हो जाने के कारण स्पष्ट नहीं है। पादपीठ पर दोनों ओर दो चामरधारी द्विभंगासन में सुन्दर आमूर्तित हैं, इनके बाह्य भाग में एक-एक खड़ी हुई स्त्री प्रतिमा है, इनसे ऊपर के परिकर भाग में दो-दो कायोत्सर्गस्थ लघु जिन हैं, ये समानान्तर नहीं बल्कि उपरिम क्रम में हैं। मुख्य प्रतिमा के मस्तक के दोनों ओर युगल-युगल माल्यधारी पुष्पवर्षक देव-देवी हैं, मस्तक के ऊपर मध्य में छत्र, उसके ऊपर मृदंगवादक है। इनके दोनों ओर गजलक्ष्मी का गज है, बांई ओर का गज भग्न हो गया है, जो अदृष्ट है।

तीर्थक्षेत्रों पर रखी जा रही गोलकें

गोलक योजना के अंतर्गत दिसम्बर जनवरी के माह में विभिन्न तीर्थों पर भी गोलकें रखवाई गयी हैं जिनके प्रति तीर्थक्षेत्र कमेटी अपना आभार व्यक्त करते हैं।

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोंणगिरि, मध्यप्रदेश
श्री दिगम्बर जैन अतिशयक्षेत्र पपौरा जी, मध्यप्रदेश
श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरि नैनागिरी, मध्यप्रदेश
श्री वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर, गांधी नगर दिल्ली

विनम्र श्रद्धांजलि

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय जी जैन के भ्राता श्री अजय जी का दु:खद निधन

समाजसेवी श्री अजय कुमार जैन सुपुत्र स्व. श्री प्रकाशचंद जी जैन (सासनी) हाथरस उत्तरप्रदेश का दुखद निधन बुधवार दिनांक ०८ जनवरी २०२५ को हो गया है। तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता है।

युवा जैन धर्म संस्कृति संरक्षण संवर्धन के लिए संगठित हों:
युवा परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन तथा अवार्ड समर्पण समारोह सम्पन्न

सभी अतिथियों को राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने किया सम्मानित - गणिनी प्रमुखश्री ज्ञानमति माताजी ने मंगल आशीर्वचन में कहा कि युवा वर्ग सज्जातित्व और खानपान की रक्षा करें। भारतीय संस्कृति और जैन धर्म के संरक्षण संवर्धन के लिए संगठित हों। जैन संस्कृति के नियम की पालना हो और वस्त्र वेशभूषा आदि भी मर्यादित पहनें। चंदनामति माताजी ने कहा कि माताजी ने जो आज प्रवचन में बोला उसकी पालन हो और युवा परिषद 50 वें स्वर्ण जयंती वर्ष धूमधाम से धर्म प्रभावना के साथ मनाई जाए। उन्होंने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

धर्म और संस्कृति के लिए एक हों - स्वामी जीने बताया कि युवा परिषद का 1977 में जन्म किस प्रकार हुआ और जन्म के अवसर पर स्वयं और पूज्य माताजी उपस्थित थीं। उन्होंने कहा कि युवाओं को धर्म का झंडा लेकर धर्म और संस्कृति के लिए एक होना चाहिए। तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बूप्रसाद जैन गाजियाबाद, मुंबई के श्री कमल कासलीवाल ने भी अपने विचार रखे।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद् के 49 वें स्थापना दिवस पर अवार्ड समर्पण और राष्ट्रीय अधिवेशन ५ जनवरी रविवार को दोपहर 1 बजे शाश्वत तीर्थ अयोध्या में गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमति माताजी ससंघ, आर्यिकाश्री चंदनामति माताजी, पीठाधीश श्री रवींद्रकीर्ति स्वामी जी के मार्गदर्शन में आरंभ हुआ। भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बूप्रसाद जैन, गाजियाबाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, जयपुर ने बताया कि समारोह में विशिष्ट अतिथि तीर्थ क्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश के अध्यक्ष जवाहरलाल जैन, सिकंदराबाद, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के एक्सपर्ट पैनल डायरेक्टर प्रकाश जैन मोदी, भाटापारा, समाजसेवी शरद कासलीवाल दिल्ली थे। राष्ट्रीय पदाधिकारी और अतिथियों ने दीप प्रज्वलन किया।

देव शास्त्र गुरु के प्रति समर्पित रहें - स्वागत उद्बोधन युवा परिषद् राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने सभी अतिथियों, विभिन्न प्रांतों से उपस्थित पदाधिकारी और सदस्यों का अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि देव शास्त्र गुरु के प्रति समर्पित होकर युवा परिषद से जुड़ें।मूल से चूल तक आशीर्वाद प्रदान करने वाली साध्वी गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमति माताजी, आर्यिकाश्री चंदना मति माताजी, पीठाधीश स्वास्ति श्री रवींद्र कीर्ति स्वामीजी का मार्ग दर्शन प्राप्त है। युवा डॉ.जीवनप्रकाश जैन का नेतृत्व मिला है तो देव शास्त्र गुरु के प्रति निष्ठा रखने वाले इस संस्था से जुड़ें।

भगवान ऋषभदेव जयंती पर अवकाश रखने का प्रस्ताव - शाम के सत्र में युवा परिषद् की शाखाओं की प्रगति का अवलोकन एवं उनके कार्यों का मंथन किया गया। 50 वें स्वर्ण जयंती समारोह पर युवा परिषद ग्रंथ प्रकाशन करने और प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जयंती के अवसर पर देश में सार्वजनिक अवकाश रखने का प्रस्ताव पारित किया गया।

परिषद के राष्ट्रीय मुख्य संयोजक प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन हस्तिनापुर के अनुसार उक्त समारोह में दिगंबर जैन अयोध्या कमेटी का विशेष सहयोग रहा। उन्होंने बताया कि अवार्ड समारोह व राष्ट्रीय अधिवेशन में दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड आदि प्रान्तो से सैकड़ों की संख्या में सदस्य उपस्थित हुए। एक्सीलेंस परफॉरमेंस अवार्ड के लिए युवा परिषद ऋषभदेव के प्रदेश उपाध्यक्ष धनपाल गंगावत, प्रदेश संयुक्त महामंत्री सचिन गनोडिया, जिलाध्यक्ष देहात सुनिल लुनदिया, संरक्षक मिथिलेश भंवरा, शाखा अध्यक्ष आशीष गांधी, महामंत्री कुशल शाह, अक्षय दलावत, नितीश जैन, महेन्द्र दलावत, गौरव वालावत, पारस गांधी, दीक्षांत किकावत, रमेश भंवरा, राजू भाई स्कूटी सहित कई सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर युवा परिषद का प्रगति रिपोर्ट सत्र भी पीठाधीश रवीन्द्र कीर्ति स्वामीजी के निर्देशन में संपन्न हुआ।

मूलनायक श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान

परम पूज्य मुनि श्री 108 अमोघकीर्ति जी महाराज

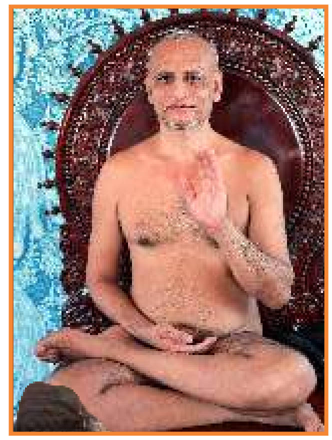

परम पूज्य मुनि श्री 108 अमरकीर्ति जी महाराज

भावभरा आमंत्रण

अनादि-अनंत काल में जिसकी विश्वव्यापी महिमा से अनंतानंत प्राणी भवपार हुए हैं ऐसे जिनधर्म के सभी आराधकों को सप्रेम जय-जिनेन्द्र ! तीर्थंकर भगवान के पांच कल्याणकों की अजस्त्र भक्तिधारा आप सभी की शांति और प्रगति का मार्ग प्रशस्त करें।

भारतवर्ष की आर्थिक राजधानी मुम्बई महानगर के दक्षिण भाग में श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के 200 वर्षपूर्ति के उपलक्ष्य में परमपूज्य युगल मुनिराज श्री अमोघकीर्ति एवं अमरकीर्ति जी के मंगलमय सान्निध्य में श्रीजिनमन्दिर का द्विशताब्दि महोत्सव एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की आयोजना की गई है। मंदिर जी के अंदर ही रजतनिर्मित नूतन मानस्तंभ, उसके ऊपर 4 रजतमयी जिनप्रतिमा तथा रजतनिर्मित 24 तीर्थंकर भगवान की 24 नूतन जिनप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के साथ साथ सुवर्णनिर्मित जिनशासनदेवता महादेवी पद्मावती जी की 5 इंच की प्रतिमा की प्रतिष्ठा का अतंर्राष्ट्रिय महामहोत्सव मुंबई महानगर के आझाद मैदान में होने जा रहा है।

पंचकल्याणक क्या है? क्यों किये जाते हैं ये महामहोत्सव? जैनों में तीर्थंकर भगवान का स्थान, स्वरूप और महत्व क्या है? क्या लाभ होता है मेरी आत्मा को और समूची मानवजाति को इन भगवान से? आइये! समझेंगे इन सभी बिंदुओं को इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव के माध्यम से। आप सभी जिनेन्द्र भगवान के भक्तगण इस अनुष्ठान में अवश्य शामिल हो, एवं महान पुण्यलाभ लें।

-: निवेदक :-

समस्त दिगंबर जैन समाज

श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी दिगम्बर जैन देहरासर ट्रस्ट, गुलालवाड़ी, मुंबई

संपर्क सूत्र :

अशोक दोशी:9820430114,7738383535, रमेश जैन:9324402101, पंकज दोशी:8369336794

श्री पार्श्वनाथ स्वामी दिगम्बर जैन दहेरासर, गुलालवाडी-मुंबई द्वि शताब्दी महोत्सव अंतर्गत
श्री आदिनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
एवं विश्वशांति महायज्ञ, गुलालवाडी-मुंबई (महाराष्ट्र)
सोमवार 03 फरवरी, 2025 से शुक्रवार 07 फरवरी, 2025
कार्यक्रम स्थल आजाद मैदान, मेट्रो थियटर के सामने, मुंबई-400020
प.पू.आ.श्री शान्तिसागरजी महाराज
प.पू.आ.श्री महावीरकीर्तिजी महाराज
प.पू. मुनि श्री अमोघकीर्ति जी
प.पू. मुनि श्री अमरकीर्ति जी
आत्मीय आमंत्रण
स्वर्णिम माता पद्मावती देवी
सकल दिगंबर जैन समाज मुंबई द्वारा निर्मित
मंगल सानिध्य एवं आशिर्वाद: प.पू. आचार्य श्री देवनंदी महाराज के शिष्य मुनि श्री अमरकीर्तिजी महाराज एवं मुनि श्री अमोघकीर्तिजी महाराज ससंघ
रजत मानस्तंभ
अनादि-अनंत काल में जिसकी विश्वव्यापी महिमा से अनंतानंत प्राणी भवपार हुए हैं ऐसे जिनधर्म के सभी आराधकों को सप्रेम जय-जिनेन्द्र ! तीर्थंकर भगवान के पांच कल्याणकों की अजस्र भक्तिधारा आप सभी की शांति और प्रगति का मार्ग प्रशस्त करें । भारतवर्ष की आर्थिक राजधानी मुम्बई महानगर के दक्षिण भाग में श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, गुलालवाडी के 200 वर्षपूर्ति के उपलक्ष्य में परमपूज्य युगल मुनिराज श्री अमोघकीर्ति एवं अमरकीर्ति जी के मंगलमय सान्निध्य में श्रीजिनमन्दिर का द्विशताब्दि महोत्सव एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की आयोजना की गई है । मंदिर जी के अंदर ही रजतनिर्मित नूतन मानस्तंभ, उसके ऊपर 4 रजतमयी जिनप्रतिमा तथा रजतनिर्मित 24 तीर्थंकर भगवान की 24 नूतन जिनप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के साथ साथ सुवर्णनिर्मित जिनशासनदेवता महादेवी पद्मावती जी की 5 इंच की प्रतिमा की प्रतिष्ठा का अंतर्राष्ट्रिय महामहोत्सव मुंबई महानगर के आझाद मैदान में होने जा रहा है । पंचकल्याणक क्या है ? क्यों किये जाते हैं ये महामहोत्सव ? जैनों में तीर्थंकर भगवान का स्थान, स्वरूप और महत्व क्या है ? क्या लाभ होता है मेरी आत्मा को और समूची मानवजाति को इन भगवान से ? आइये ! समझेंगे इन सभी बिंदुओं को इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव के माध्यम से । आप सभी जिनेन्द्र भगवान के भक्तगण इस अनुष्ठान में अवश्य शामिल हो, एवं महान पुण्यलाभ लें ।
माता पिता
श्रीमती पूर्णिमा-पद्मकुमार मडीया
सौधर्म इन्द्र
श्रीमती संजु-सुरेश जैन (चित्तौड़)
कुबेर इन्द्र
महायज्ञनायक
ईशान इन्द्र
चक्रवर्ती
श्रीमती ज्योत्ना-राकेश शाह
सनतकुमार इन्द्र
रजत मानस्तंभ
स्वर्णिम माता पद्मावती देवी

मांगलिक कार्यक्रम :- सुबह- ९.०० बजे एवं दोपहर:- ३.०० बजे यथानुसार पूज्य युगल मुनिराज के मंगल प्रवचन प्रतिदिन होंगे ।
गर्भकल्याणक सोमवार दि. 3 फरवरी 2025
जन्म कल्याणक मंगलवार दि. 4 फरवरी 2025
दीक्षा कल्याणक बुधवार दि. 5 फरवरी 2025
महोत्सव समिति : श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी दिगम्बर जैन देहरासर ट्रस्ट, गुलालवाड़ी,मुंबई
एवं श्री पार्श्वनाथ नवयुवक मंडल -मुंबई
विनित : सकल दिगंबर जैन समाज, मुंबई एवं श्री पार्श्वनाथ स्वामी दिगंबर जैन देरासर ट्रस्ट, गुलालवाडी मुंबई
संपर्क सूत्र : ● अशोक दोशी:9820430114,7738383535 ● रमेश जैन: 9324402101 ● पंकज दोशी:8369336794

श्रमण संस्कृति के लिए चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का अवदान अविस्मरणीय

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद पदारोहण शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में हुआ व्याख्यान

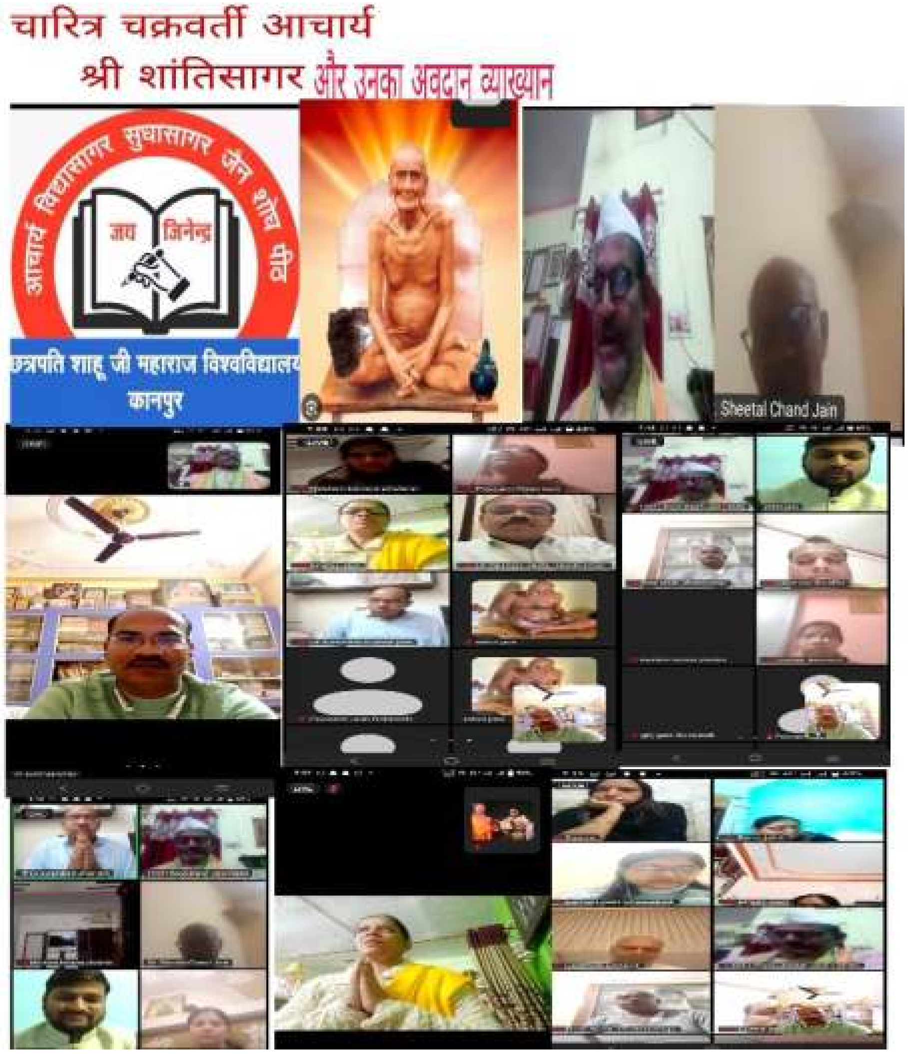

कानपुर वि. वि. के तत्वावधान में डॉ. विनय कुमार पाठक कुलपति के संरक्षकत्व में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद पदारोहण शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज एवं उनका अवदान विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मार्गदर्शक डॉ. शीतलचंद्र जैन जयपुर (निर्देशक श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर) रहे। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रो.फूलचंद्र जैन 'प्रेमी' वाराणसी ने अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता युवा मनीषी डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर रहे। प्रारंभ में मंगलाचरण अंशु जैन "कानपुर" ने किया। संयोजक पीठ के सचिव सुमित जैन शास्त्री कानपुर ने आभार व्यक्त किया। संचालन राहुल जैन "इंदौर"सहायक आचार्य ने किया। स्वागत भाषण डॉ. कोमल जैन शास्त्री सहायक आचार्य ने किया।

अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर फूलचंद्र प्रेमी वाराणसी ने आचार्यश्री के अवदान को रेखांकित किया तथा उनके द्वारा जैन संस्कृति के संरक्षण में दिए गए अद्वितीय अवदान के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि अचार्यश्री ने 1956 में 1105 दिन तक अन्न का त्याग करके और निरन्तर साधना करके जैनायतनों की पवित्रता की रक्षा कर जैनधर्म का महान उपकार किया था।

मार्गदर्शक डॉ शीतलचंद्र जैन प्राचार्य जयपुर ने कहा कि चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने दिगम्बर जैन श्रमण परंपरा को पुनर्जीवित कर जैनधर्म की अविस्मरणीय प्रभावना की थी। साधु संतों और श्रावकों को उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। व्याबर के उनके ऐतिहासिक चातुर्मास का उल्लेख किया जिसमें दो परंपरा के आचार्य एकसाथ एक मंच पर थे। अचार्यश्री के निमित्त उपादान, निश्चय व्यवहार के संदेश आज अधिक प्रासंगिक हैं।

इस मौके पर मुख्य वक्ता डॉ. सुनील जैन संचय ने कहा कि बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य के रूप में जैन समाज ने जिस सूर्य का प्रकाश प्राप्त किया उसने सम्पूर्ण धरा का अंधकार समाप्त कर एक बार फिर से भगवान महावीर के युग का स्मरण कराया था वह थे श्रमण जगत में महामुनींद्र, चारित्र चक्रवर्ती, आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज थे। कर्नाटक के भोज के येलगुल में सन 1872 में जन्में बालक सातगौड़ा ने यरनाल में मुनिदीक्षा ग्रहण कर सन 1924 समडौली में आचार्य पद प्राप्त किया था। संपूर्ण देशभर में पद विहार कर उन्होंने बीसवी सदी में दिगम्बरत्व के विस्तार व जैनत्व के उन्नयन के लिए अनेकों कार्य किये। देव-शास्त्र-गुरु, धर्म, धर्मायतन

एवं जिनशासन की रक्षा के लिए इन महामना अचार्यश्री ने अनेक महान कार्य किए हैं। इसलिए युग निर्माता के रूप में इनका स्मरण किया जाता है। आज जो विशाल श्रमण परंपरा दिखाई दे रही है यह इन्हीं महामना अचार्यश्री की देन है।वर्तमान में 1800 से अधिक पिच्छीधारी दिगम्बर जैन संत उनका स्मरण कर मोक्षमार्ग पर अग्रसर हैं। उनकी पट्ट परम्परा के पंचम पट्टाधीश आचार्य के रूप में आचार्यश्री वर्धमानसागरजी विगत 1990 से उक्त पद पर शोभायमान हैं।

वर्तमान में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का आचार्य पद प्रतिष्ठापन के 100वें वर्ष को आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी महोत्सव के रूप में में भव्य विशाल स्तर पर वैचारिक आयामों के साथ संस्कृति संवर्धन, सामाजिक सरोकार के बहुउद्देशीय पंचसूत्री कार्यक्रमों के साथ मनाया जा रहा है। इसका उदघाटन पंचम पट्टाचार्य आचार्यश्री वर्द्धमानसागर जी महाराज के सान्निध्य में अक्टूबर 2024 में भव्य उदघाटन भी हो चुका है।

इस मौके पर डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती बुरहानपुर ने शताब्दी वर्ष को सफल बनाने के लिए अनेक सुझाव दिए तथा इस प्रकार की व्याख्यान मालाओं की आवश्यकता को प्रसंशनीय कदम बताया।

गौरव ग्रन्थ का प्रकाशन :

मुख्य वक्ता डॉ. सुनील जैन संचय ने सभी को जानकारी देते हुए बताया कि चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में पंचम पट्टाचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज की प्रेरणा से उनके अद्वितीय विराट व्यक्तित्व को नवीन पीढ़ी के समक्ष प्रकाशित करने के लिए एक गौरव ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। आप सभी अपनी भावांजलि, महत्वपूर्ण आलेख शीघ्रता से प्रकाशनार्थ भिजवाएं।

इस अवसर पर प्रोफेसर जयकुमार उपाध्ये दिल्ली, डॉ सुरेन्द्र जैन भारती बुरहानपुर, शोध न्यास पीठ के प्रमुख प्रदीप जैन तिजारा वाले, सुधींद्र जैन सीए, अरविंद जैन सीए, डॉ ज्योतिबाबू जैन उदयपुर, डॉ यतीश जैन जबलपुर, त्रिभुवन जैन महामंत्री कानपुर जैन समाज, सुरेन्द्र जैन वाराणसी, डॉ प्रिया जैन, पूनम जैन बहराइच, रमेशचंद्र शास्त्री जोबनेर, सपना जैन, रेनू जैन, सुमन गाजियाबाद, वी के जैन, दिनेश जैन, दीपक शास्त्री, उमेश जैन, बृजेश शास्त्री, संतोष जैन, सुषमा पाटनी, नीलम जैन आदि प्रमुख रूप से शामिल रहे।

श्री चंद्रगिरी महातीर्थ, डोंगरगढ़ में १ से ६ फरवरी के बीच समाधि के १ वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम

प्रातः स्मरणीय,समाधि सम्राट परम पूज्य संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज की पावन समाधिस्थली श्री चंद्रगिरी महातीर्थ,डोंगरगढ़ (छ.ग.) में पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण समाधि के १ वर्ष पूर्ण होने के पावन प्रसंग पर आगामी दिनांक १ फरवरी से ६ फरवरी २०२५ तक भव्य धार्मिक अनुष्ठान्न सहित अन्य कार्यक्रम का आयोजन सुनिश्चित है। श्री नवीन जैन जी,(पीएनसी) राज्यसभा संसद सदस्य (आगरा) के नेतृत्व में "विद्यायतन" समाधि स्मारक ,चंद्रगिरी ट्रस्ट, एवं सर्वोपयोगी ट्रस्ट के प्रतिनिधिमंडल जिसमें श्री प्रभात जी मुम्बई, श्री विनोद बडजात्या जी रायपुर, श्री सुधीर जी जैन कागजी दिल्ली एवं श्री मनीष जी जैन रायपुर ने माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी से मुलाकात कर समाधि दिवस के अवसर पर होने वाले कार्यक्रम के लिए सादर आमंत्रित किया। आदरणीय श्री अमित शाह जी ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है। १ से ६ फरवरी के बीच डोंगरगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में शामिल जरूर होंगे। उनका विस्तृत कार्यक्रम कुछ ही दिनों में प्राप्त हो जाएगा।

- श्री विद्यायतन स्मारक स्थल चंद्रगिरी ट्रस्ट

नांदणी मठ को 'ए' ग्रेड दर्जा देने का आश्वासन: मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव में किया संबोधित

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने सोमवार को नांदणी जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव को संबोधित किया। इसमें उन्होंने कहा कि सभी उपस्थित राजकीय अतिथि और लोक प्रतिनिधि मिलकर तथा राज्य सरकार नांदणी मठ को 'ए' ग्रेड दर्जा देने का विशेष प्रयत्न करेंगे। मुख्यमंत्री फडणवीस ने जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव में उपस्थित जैन समुदाय को प्रारंभ में सभी को जय जिनेंद्र का घोष लगाकर संबोधित किया। महोत्सव के प्रमुख राजेंद्र यड्रावकर, राहुल आवाडे के विशेष प्रयत्न से मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस नांदणी जिनबिम्ब पंचकल्याण महोत्सव में पधारे थे।

सीएम ने वस्तुत्त्व महाकाव्य का विमोचन किया - धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने सोमवार को नांदणी पंचकल्याणक महोत्सव में आचार्य भगवन श्री विशुद्ध सागरजी महाराज ससंघ एवं नांदणी के जिनसेन भट्टारक महास्वामीजी के दर्शनकर आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी द्वारा रचित वस्तुत्त्व महाकाव्य का मुख्यमंत्री ने विमोचन किया। मुख्यमंत्री ने भी अपने मुखारविंद बिंद से **नमोस्तु शासन जयवंत हो** का जयघोष किया।

महाराष्ट्र मुख्यमंत्री जी के साथ केबिनेट मंत्री हसनसो मुश्रीफ, प्रकाश आबिटकर, अशोकराव माने, प्रकाश आवाडे, अमल महाडिक, सुरेश खाडे, राजू शेट्टी,निवेदीता माने, सुरेश राव, हाळवणकर, उत्तम पाटील, दक्षिण भारत जैन सभा के अध्यक्ष भालचंद्र पाटिल, रावसाहेब पाटिल, महावीर गाट, ललित गांधी, किशोरी आवाडे, स्वरूपा यड्रावकर आदि उपस्थित रहे।

गोमटगिरि तीर्थ में भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक के साथ नया वर्ष 2025 मनाया गया : तीन दिवसीय "उदय" कार्यक्रम "भावनायोग" का समापन भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक किया गया

नया वर्ष 2025 नई खुशियाँ और नये संकल्प के साथ आगे बढ़ें" यह उद्गार परम पूज्य मुनि श्री प्रमाणसागर महामुनिराज ने गोमटगिरि तीर्थ पर भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक एवं तीन दिवसीय युवाओं को दिए जा रहे मोटीवेशन शिविर "भावनायोग" के समापन पर व्यक्त किए। प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया, परम पूज्य मुनि श्री ने युवाओं से संवाद करते हुए सभी को "बचपन" में ले गए और कहा, याद करो उस बचपन में जब आपसे कोई भी गलती हो जाती थी तो आप उन गलतियों को मां-बाप से तथा गुरु जनों से नहीं छुपाते नहीं थे। भोलेपन में सारी बातें बता देते थे, लेकिन अब आप लोग बड़े और समझदार हो गये हो। अपनी बड़ी-बड़ी गलतियों को मां-बाप और गुरुजनों से छिपाने लगे हो। जब कि तुम जानते हो मां-बाप और गुरुजनों को अपनी कमजोरियां बताओगे तो वह आपको सही मार्ग बताऐंगे। उन्होंने लगभग एक घंटे "भावनायोग" के माध्यम से सभी को 2025 नये वर्ष में नए संकल्प, उत्साह के साथ जीवन जीने के तरीके बताए। सभी को आशीर्वाद प्रदान किया।

इस अवसर पर संघस्थ मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज एवं मुनि श्री संधान सागर महाराज सहित समस्त क्षुल्लक गण मंचासीन थे। भावनायोग के बाद भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक प्रारंभ हुआ। जिसका प्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य गुणायतन के शिरोमणि संरक्षक एवं धर्म प्रभावना समिति के महामंत्री हर्ष तृप्ति जैन परिवार को मिला। बड़ी संख्या में जैन समाज जन उपस्थित हुए। प्रातः 7.30 बजे से "योग" की कक्षा थी। जिसमें स्वास्थ्य संबंधित सभी जानकारियां दी गई। उसके बाद एक घंटे का भावनायोग मुनि श्री के मुखारविंद से शुभारंभ हुआ। जिसमें युवावर्ग के साथ बड़ी संख्या में इंदौर नगर के नागरिक शामिल हुए। इस अवसर पर इंदौर शहर के दानवीर भरत कुसुम मोदी का नागरिक अभिनंदन किया गया। इसमें श्री बाहुबली दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट धर्मप्रभावना समिति एवं सकल दिगंबर जैन समाज तथा इंदौर के सभी समाजसेवी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने शॉल-श्रीफल एवं तिलक के साथ सम्मान किया गया।

स्थापना वर्ष : 1902 ई.वी.

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

भारतीय सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन पंजीकृत सं. 570/1930
बम्बई सार्वजनिक न्यास अधिनियम 1950 के अधीन पंजीकृत सं. एफ-10/1952

125 वर्ष
शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष
22 अक्टूबर 2026 - 22 अक्टूबर 2027

एक बार वंदे जो कोई,
ताहि नरक पशु गति नहिं होई

तीर्थ हमारी श्रद्धा, भक्ति और आस्था के प्राण हैं

तीर्थ हमारी संस्कृति और धर्म के प्रतीक हैं

तीर्थ हमारी मोक्ष साधना के प्रेरक निमित्त हैं

स्थापना एवं उद्देश्य

123 वर्ष पूर्व जब हमारे तीर्थ क्षेत्रों पर आक्रमण और अतिक्रमण की घटनाएँ बढ़ने लगीं, तब उनकी सुरक्षा के लिए दिगंबर जैन समाज की प्रतिनिधि संस्था के रुप में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का प्रादुर्भाव 1902 में हुआ, इसके संस्थापक थे तीर्थ-भक्त स्व. सेठ माणिकचंद हीराचंद जवेरी। कमेटी देश के कोने-कोने में फैले तीर्थक्षेत्रों, प्राचीन ऐतिहासिक एवं पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण जिनालयों तथा पुरावशेषों के सरंक्षण-संवर्धन का दायित्व दृढ़ता से निभा रही है। समाज की कोई भी संस्था हो उसका विकास तभी संभव है जब उसे सशक्त नेताओं का नेतृत्व, मार्गदर्शन, लग्नशील कर्मठ कार्यकर्ताओं का सहयोग, साधु महात्माओं का आशीर्वाद प्रोत्साहन प्राप्त हो। कमेटी के अध्यक्ष पद पर सेठ हुकमचंद जैन इंदौर, साहू शांति प्रसाद जैन, सेठ लालचंद हीराचंद जवेरी, साहू श्रेयांश प्रसाद जैन, साहू अशोक कुमार जैन, साहू रमेशचंद जैन, श्री नरेश कुमार सेठी, श्री आर, के, जैन, श्री सुधीर जैन कटनी, श्रीमती सरिता जैन, श्री प्रभातचन्द्र सवाई लाल जैन एवं श्री शिखरचंद पहाड़िया रहे हैं। वर्तमान में **श्री जम्बूप्रसाद जैन, गाजियाबाद** राष्ट्रीय अध्यक्ष के रुप में कार्य संभाल रहे हैं।

श्री सम्मेद शिखर जी प्रकरण- एक सदी से चल रहे इस प्रकरण का स्थायी समाधान करने के अनेक प्रयास किये गये, परन्तु उनमें सफलता नहीं मिली। वर्ष 2005 में आए रांची उच्च न्यायालय की पूर्ण पीठ के निर्णय के अनुसार जब झारखण्ड सरकार द्वारा पहाड़ के प्रबंधन के लिए कमेटी का गठन करने हेतु नोटिस जारी किया गया तो श्वेताम्बर समाज की फर्म आनंदजी कल्याणजी ने उसका विरोध करते हुए सर्वोच्च न्यायालय में एसएलपी दाखिल कर प्रबंधन समिति के गठन पर रोक लगाने का आदेश सर्वोच्च न्यायालय से प्राप्त कर लिया। तब दिगम्बरों की ओर से सर्वोच्च न्यायालय में एसएलपी दाखिल की गई है और उस पर अभी भी सुनवाई चल रही है, वरिष्ठ वकील पैरवी कर रहे हैं, जिनकी फीस पर तीर्थकमेटी की ओर से करोड़ों रुपये व्यय हो रहे हैं।

श्री गिरनार जी प्रकरण- पिछले कई वर्षो से अजैन तत्वों द्वारा गैर कानूनी तरीकों से किये जा रहे अतिक्रमणों को लेकर गुजरात हाईकोर्ट में लंबित हैं। गुजरात हाई कोर्ट के स्टे-ऑर्डर के बावजूद भी वहां नए-नए निर्माण कार्य करा दिए गए। आवश्यकता है कि दिगम्बर जैन श्रावक भारी संख्या में हर वर्ष इस क्षेत्र के दर्शन के लिए जाएँ, जिससे हमें अपने अधिकार कायम रखने में बल मिल सके।

श्री अन्तरिक्ष पाश्रर्वनाथ जी क्षेत्र शिरपुर प्रकरण- श्री अन्तरिक्ष पाश्रर्वनाथ क्षेत्र की मूल प्रतिमा दिगम्बर होते हुए भी पिछले 100 वर्षो से अधिक समय से श्वेताम्बर मूर्तिपूजक यह दावा करते आये हैं कि प्रतिमा श्वेताम्बर है। हमारी ओर से सर्वोच्च न्यायालय में यह अपील की गई कि मूल प्रतिमा का पूरा लेप उतारकर उसका निरीक्षण किया जाये और यदि वह मूर्ति दिगम्बर है तो उसे दिगम्बरों को सौंपा जाए और यदि वह श्वेताम्बर पाई जाती है तो उन्हें सौंप दी जाये। मामले पर सुनवाई चल रही है।

श्री ऋषभदेव (केशरियाजी) जी प्रकरण- सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय दिया था कि श्री ऋषभदेव का मंदिर जैन मंदिर है, हिन्दू मंदिर नहीं है। इस निर्णय के विरुद्ध राजस्थान सरकार, ब्राह्मण सभा एवं आदि वासी समाज द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में पुनरीक्षण याचिकाएँ (रिव्यू) दाखिल कर यह मांग की गई कि इसे सर्वधर्म मंदिर घोषित किया जाये, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया था। हाल ही में श्वेताम्बरों की ओर से अदालत में एक नई अर्जी दाखिल की गई है कि केसरिया जी मंदिर को श्वेताम्बर मंदिर घोषित किया जाए।

जीर्णोद्धार एवं विकास

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी जीर्णोद्धार एवं विकास के कार्य करा रही है। प्रतिमाओं, मंदिरों, शिलालेखों और तीर्थों के होने से हमारा इतिहास विद्यमान है। हमें तीर्थों की रक्षा करना है। जैन होने के नाते हमारा यह दायित्त्व बनता है कि जैन संस्कृति की रक्षा के लिए हम उदार हृदय से अपना सहयोग प्रदान करें।

शिखरजी तीर्थ की सुरक्षा व विकास करने के लिए स्थायी कार्यालय स्थापित है। जो टोंकों की व्यवस्था एवं विकास का कार्य कर रहा है। कार्यालय में प्रबंधक सहायक प्रबंधक, प्रक्षाल-क्लर्क आदि कर्मचारी कार्यरत हैं। इसी प्रकार पहाड़ पर पूजन सुरक्षागार्ड एवं सुपर वाइजर, के लिए आवश्यक संख्या में पुजारी नियुक्ति हैं।

1. **यात्री निवासः** शिखरजी पर तीर्थ यात्रियों के बढ़ते हुए आवागमन को देखते हुए झारखण्ड सरकार का टूरिस्ट सेंटर लीज पर लिया गया है।
2. **शिखरजी पहाड़ पर पक्की सड़क, पुल, बेंच एवं छतरियों निर्माण :** संस्था द्वारा ही तीर्थवंदना पथ का निर्माण मधुबन की तलहटी से ऊपर गौतम स्वामी टोंक तक जाने के लिए फुट चौड़ा सीमेंट रोड 6 बनाया गया है तथा चन्दन चौक एवं गन्धर्व नाले पर पुलियों का निर्माण जगह-कराया गया है। कई छतरियों एवं वंदना पथ के किनारे जगह सीमेंट की बैचें लगवाई गई हैं तथा यात्रियों की सुविधा सुरक्षा व सूचना के लिए सड़क के दोनों ओर सूचना बोर्ड भी लगाये गये हैं।
3. **टोंकों पर बिजली रक्षक प्रणाली (लाइटनिंग प्रोटेक्टर सिस्टम) :** पहाड़ पर बार-बार बिजली गिरने से हमारी प्राचीन टोकें क्षतिग्रस्त हो जाती थीं इसे रोकने के लिए लाइटनिंग प्रोटेक्टर सिस्टम लगवाए गए हैं।

समाज से अपेक्षाएँ, आगे आएँ तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत करें:-

तीर्थरक्षा कोश (रु. 1000/- प्रतिमाह अथवा रु. 12000/- वार्षिक)- एक व्यक्ति के लिए रु. 1000/- प्रतिमाह दान देना बहुत कठिन काम नहीं है। युवक-युवती मंडल आगे आकर अपने गाँव शहर से 10-100-500-1000 लोगों जोड़ने की जिम्मेदारी लें तो हम कुछ महीनों में ही 1 लाख लोगों को जोड़ सकते हैं।

तीर्थोद्धार योजना- विभिन्न स्थानों के दिगंबर जैन समाज एक-एक प्राचीन धरोहर-तीर्थक्षेत्र को गोद लेकर जीर्णोद्धार कर सकते हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पास लगभग 250 उपेक्षित क्षेत्रों की सूची है लेकिन धनाभाव के कारण हम वहाँ कुछ नहीं कर पा रहे हैं, देशभर के दिगंबर जैन समाज से अपेक्षा है कि वह तीर्थक्षेत्र कमेटी को तीर्थ संरक्षण के इस महान कार्य में अपनी-2 क्षमता के अनुसार सहयोग अवश्य करेंगे ताकि हम अपने जैन धर्म और हजारों साल प्राचीन मंदिरों और प्रतिमाओं को अपनी भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित कर सकें।

तीर्थ रक्षाकलश योजना:- वर्षायोग में साधू-संत एक स्थान पर रहकर धर्म प्रभावना करते है। तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने योजना बनाई गई है कि वर्षायोग में एक कलश **"तीर्थरक्षा कलश"** के नाम से स्थापित किया जाए और उससे जो धनराशि प्राप्त हो वह तीर्थ क्षेत्रों के संरक्षण, संवर्द्धन में व्यय की जाए। इस कार्य में समाज/ चातुर्मास समितियों का सहयोग अपेक्षित है।

गोलक योजना- इस योजना के अंतर्गत भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से विभिन्न तीर्थक्षेत्रों, मंदिरों आदि में दान पात्र रखवाए जा रहे हैं जिससे प्राप्त दान राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी के माध्यम से तीर्थों की सेवा संरक्षण में खर्च की जा सके इस योजना में देश के सभी तीर्थों के पदाधिकारियों एवं मंदिरों के ट्रस्टियों का सहयोग अपेक्षित है। सभी तीर्थक्षेत्रों एवं प्रतिष्ठित मंदिरों में तीर्थक्षेत्र कमेटी का दानपात्र रखवाकर कमेटी को संबल प्रदान करें।

✻ **श्री सम्मेद शिखरजी की स्थायी योजनाएँ** - तीर्थराज श्री सम्मेद शिखरजी में पारसनाथ टोंक पर अखंड ज्याति फंड में रु. 5100/-, स्थायी पूजन फंड में रु. 1100/- एवं स्थायी आरती फंड में रु. 2100/-, प्रदान कर शाश्वत क्षेत्र की सेवा कर पुण्यार्जन प्राप्त करें।

✻ **दैनिक दान योजना** - तीर्थ के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास हेतु दैनिक-दान योजना बनाई गई है। इस योजना के अंतर्गत प्रति व्यक्ति प्रति दिन केवल एक रुपया देकर इसका सदस्य बन सकता है। देश के हर व्यक्ति को इस योजना से जुड़ कर सहयोग करना चाहिए।

✻ विवाह, जन्मोत्सव आदि विशिष्ट प्रसंगों पर तीर्थ रक्षार्थ दान देने की परम्परा निभाएं।

✻ मंदिरों में होने वाली अभिषेक की बोलियों में एक बोली तीर्थ रक्षा के नाम से कराएँ और उसमें जो राशि प्राप्त हो उसे तीर्थक्षेत्र कमेटी को भिजवायें।

✻ पंचकल्याणक एवं अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में बची हुई राशि में एक निश्चित अंश तीर्थक्षेत्र कमेटी को देने की प्रेरणा हमारे आचार्यों ने की है, उसकी अनुनपालना करें।

✻ सभी मंदिर, संस्थान अपनी वार्षिक आमदनी का कुछ अंश तीर्थक्षेत्र कमेटी को देने का नियम बनायें।

✻ पंचायत समितियों से विनम्र निवेदन है कि पर्वराज पर्युराज पर्युषण के पुनीत अवसर पर कूपनों के माध्यन से तीर्थ रक्षार्थ दान संग्रहीत कर तीर्थक्षेत्र कमेटी को भिजवायें।

✻ कमेटी के मुख्यपत्र जैन तीर्थ वंदना (मासिक) में विज्ञापन देकर एवं रु 2500/- की राशि प्रदान कर आजीवन सदस्य बनें (10 वर्षों के लिए)।

✻ **सदस्यता योजना**-तीर्थक्षेत्र कमेटी के संरक्षक सदस्य, परम सम्मानीय सदस्य एवं आजीवन सदस्य बन कर कमेटी को सहयोग कर सकते हैं-

1. **संरक्षक सदस्यः**- रुपये 5 लाख, इसमें रुपये 4 लाख की राशि कमेटी के ट्रस्ट में देने पर 80 जी का लाभ मिलेगा।
2. **परम सम्मानीय सदस्यः**- रुपये 1 लाख, रु 70 हजार की राशि ट्रस्ट में देने पर 80 जी का लाभ मिलेगा।
3. **सम्मानीय सदस्यः**- रुपये 31 हजार, इसमें रु. 20 हजार की राशि ट्रस्ट में देने पर 80 जी का लाभ मिलेगा।
4. **आजीवन सदस्यः** रुपये 11 हजार, इसमें रु. 7,500/- की राशि ट्रस्ट में देने पर 80 जी का लाभ मिलेगा।

विशेषः- कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चैरिटेबल ट्रस्ट संयुक्त कुटुंब, सोसायटी भी इसी प्रकार उपरोक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। परन्तु इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए ही होगी।

मंदिरों के पदाधिकारियों से विशेष अनुरोध

- **मंदिरों को कमेटी का सदस्य बनाना** - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की समस्त गतिविधियों की जानकारी सम्पूर्ण समाज तक नहीं पहुंच पाती है, इसलिए संस्था ने निर्णय लिया है कि देश के प्रत्येक दिगम्बर जैन मन्दिर को संस्था का आजीवन सदस्य बनाया जाए। प्रत्येक मन्दिर तीर्थक्षेत्र कमेटी का सदस्य बनकर अपने को संरक्षित महसूस करें ऐसा हमारा प्रयास रहेगा। तीर्थक्षेत्र कमेटी के माध्यम से निम्नलिखित सुविधा एवं व्यवस्थाएं दी जावेगी।
- मंदिर के पंजीकरण सम्बन्धी कार्यो, निर्माण कार्यों, धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों, आयकर रिटर्न आदि कार्यों, फण्ड विनियोजन, प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार आदि कार्यों के लिए मार्गदर्शन एवं राज्य सरकार से आर्थिक सहयोग दिलाने में यथा संभव प्रयास करेगी। संगठन में ही शक्ति होती है, हम सब परस्पर सहयोग से शक्तिशाली होगे तथा राष्ट्रीय संस्था से जुड़कर अपने को गौरवान्वित महसूस करेगें, जिससे हमारा संगठन मजबूत होगा और हम अपनी आवाज को प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार तक पहुंचा सकेगें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार है-

- आजीवन सदस्य रु. 11000/- (25 वर्ष के लिए)
- सम्माननीय सदस्य रु. 31000/- (25 वर्ष के लिए)
- परम सम्माननीय सदस्य 100000/- (25 वर्ष के लिए)
- संरक्षक सदस्य 500000/- (25 वर्ष के लिए)

सदस्यता ग्रहण करते समय आप अपनी समाज से किसी भी एक सदस्य का नाम प्रतिनिधि के रूप में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को भेज सकेगें, जिसे राष्ट्रीय एवं आंचलिक अध्यक्ष के निर्वाचन में भी भाग लेने का अधिकार होगा। प्रतिनिधि का नाम कमेटी को सूचना देकर कभी भी बदला जा सकता है सदस्यता का फार्म इस पत्र के सलंग्न है। कृपया फार्म को भरकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मुख्य कार्यालय मुम्बई में प्रेषित करें तथा अपनी सदस्यता राशि बैंक ऑफ बड़ौदा में जमा करके उसकी सूचना भी मुख्य कार्यालय को प्रेषित करें ।

सम्पर्क सूत्र : 9833671770, 8168436048, 9109228683

खाते का नाम

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

बैंक ऑफ बड़ौदा, ब्रांच वी. पी. रोड़, मुम्बई

खाता संख्या : 13100100008770 IFSC : BARB0VPROAD

आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं एवं अन्य सभी त्यागीगणों से विनम्र अनुरोध

विभिन्न नगरों में साधनारत/चातुर्मास के लिए विराजमान परम पूज्य आचार्यों, मुनियों और आर्यिका माताओं से भी करबद्ध निवेदन करते हैं कि आप समाज को तीर्थ संरक्षण के इस महत्वपूर्ण कार्य में समय-2 पर समाज को तन मन धन से सहयोग देने के लिए मार्गदर्शन करें और समाज को तीर्थक्षेत्रा कमेटी को आर्थिक रुप से मजबूत बनाने के लिए समाज को प्रेरित कर अपना आशीर्वाद हम सभी पर बनायें रखें।

साधर्मी महानुभाव,

सप्रेम सादर जय-जिनेन्द्र!

संगठन, समाज का लक्ष्य हमारा, समन्वय-सद्भावना पथ की धारा।
तीर्थक्षेत्र कमेटी पहुंचें घर-घर में, सुरक्षित हो हर तीर्थ हमारा॥

वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु में आस्थावान, पंथ एवं बालवाद की उलझनों से दूर सकल दिगम्बर जैन समाज को एकता के सूत्र में बांधने को समर्पित भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना के 124 वर्ष पूर्ण होने पर इसे जन-जन से जोड़ने के लिए 125 वां स्थापना दिवस महोत्सव (22 अक्टूबर 2026-22 अक्टूबर 2027) मनाने का निश्चय किया है। किसी भी संस्था का स्थापना दिवस हमें संस्था के उत्तरदायित्व के प्रति बोध कराता है, साथ ही संस्था को जीवन्त करते है, उसके कार्यक्रम।

देश के समस्त जैन मन्दिर ही जैन समाज के केन्द्र बिन्दु है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी स्थापना दिवस के समस्त कार्यक्रम श्री मन्दिर जी आधारित एवं आपके मार्गदर्शन और नेतृत्व में ही होगें। हमारा यह भी सौभाग्य है कि इन दिनों साधु परमेष्ठियों के चार्तुमास भी हो रहे होगें, उनका सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद भी मिल सकेगा। हमारा प्रयास है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने स्थापना दिवस कार्यक्रम को परम पूज्य साधु परमेष्ठियों के आशीर्वाद से साधुओं के एवं समाज नेतृत्व में आयोजित कर सकल दिगम्बर जैन समाज को जागृत कर, जोड़ने का प्रयास करें, यही हमारी कामना है।

आप सभी से अनुरोध है कि सभी एक साथ मिलकर **'स्थापना दिवस महोत्सव'** के कार्यक्रमों को अपने सक्रिय एवं रचानात्मक सहयोग द्वारा चिरस्मरणीय बनाए तथा सम्पूर्ण देश में दिगम्बर जैन समाज की एकता का शंखनाद करें। आषा है आपके द्वारा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को सहयोग एवं संरक्षण प्राप्त होगा।

जम्बूप्रसाद जैन	संतोष जैन पेंढ़ारी	जवाहर लाल जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेरयमैन-स्थापना वर्ष समिति

निवेदक : भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
Website : www.tirthkshetracommettee.com
E-Mail : tirthvandana4@gmail.com

PARAS # 9811374961

नवगृह तीर्थ वरुर हुबली मे 15 से 26 जनवरी 2025 तक भव्य पञ्चकल्याणक महोत्सव

कर्नाटक के प्रमुख नगर हुबली मे नवगृह तीर्थ वरुर हुबली मे 15 से 26 जनवरी 2025 तक भव्य पञ्चकल्याणक महोत्सव होने जा रहा है जिसमे अनेको संतो के आगमन होने की संभावना है यह आयोजन अपने आप मे अनुपम है यह क्षेत्र विश्व की अनुपम कृति के रूप मे जाना जाएगा यहाँ विश्व के सबसे बडे 405 फीट उतंग सुमेरु पर्वत का भव्य पञ्चकल्याण महोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है इस अभूतपूर्व महोत्सव अपना पावन सानिध्य प्रदान करने हेतु अभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगी संत आचार्य श्री 108 पद्मनंदी जी महाराज का कोन्नुर से 22 DEC 2024 को मंगल विहार हुआ।

इस आयोजन को गणधराचार्य श्री 108 कुन्थुसागर महाराज ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया है एवम प्रमुख सानिध्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 गुणधरनंदीजी महाराज का प्राप्त हो रहा है इस महोत्सव मे अग्निकुमार इंद्र श्री अतिशकुमार रतनलाल सा खवडे प्रतिभा आतिशकुमार खवडे इनकी और प्रतिमा निर्माण मे भी सहयोग प्रदान किया है इस महोत्सव मे देश के नामचीन संगीतकार अपनी स्वर लहरिया बिखेंरेगे और आयोजन को भव्य एवम भक्तिमय करेगे यह आयोजन एस डी एम ट्रस्ट नवग्रह तीर्थ क्षेत्र वरुर तालुका हुबली जिला धारवाड कर्नाटक के संयोजन मे सम्पन्न होगा ट्रस्ट की और से आयोजन मे सम्मिलित होने एवम् धर्म लाभ लेने की अपील की है।

श्री महावीरजी संग्रहालय के दृश्य

श्री महावीरजी संग्रहालय के दृश्य